डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

'अब्दुर्रहमान बिजनौरी : जीवन एवं कृतित्व' पर संगोष्ठी

बिजनौरी ग़ालिब–तनक़ीद के सिकंदर हैं : इब्ने कँवल

नई दिल्ली, 24 नवंबर 2018 : साहित्य अकादेमी द्वारा अकादेमी सभाकक्ष में उर्दू के प्रतिष्ठित आलोचक अब्दुर्रहमान बिजनौरी के जीवन एवं कृतित्व पर आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी आज सफलतापूर्वक संपन्न हुई। संगोष्ठी के दूसरे दिन तीन विचार–सत्रों का आयोजन किया गया था, जिनकी अध्यक्षता श्री फ़े सीन एजाज़, प्रो. अनीस अशफ़ाक़ तथा प्रो. इब्ने कँवल ने की। इन सत्रों में विद्वानों द्वारा अब्दुर्रहमान बिजनौरी के जीवन, व्यक्तित्व और कृतित्व के विभिन्न पहलुओं पर आलेख पढ़े गए।

श्री फ़ारूक़ अर्गली ने 'अब्दुर्रहमान बिजनौरी : उर्दू तारीख़ की लासानी शख्सियत' शीर्षक अपने आलेख में बिजनौरी के जीवन–क्रम का विवरण देते हुए उनके कृतित्व की खासियत का बयान किया। डॉ. राशिद अनवर राशिद ने अब्दुर्रहमान बिजनौरी की शायरी पर केंद्रित अपने आलेख में बताया कि बिजनौरी ने केवल 18 नज़्में लिखीं, जिनको पढ़कर एक अच्छे शायर की संभावनाएँ उनमें नज़र आती हैं, लेकिन ज़िंदगी ने उन्हें इसे साबित करने का मौका नहीं दिया। श्री हक़्क़ानी–अल क़ासमी और डॉ. सरवर–उल हुदा और क़ासिम खुर्शीद ने अपनी–अपनी तरह से बिजनौरी की आलोचना कृति 'महासिने कलामे ग़ालिब' के महत्त्व को उजागर किया। डॉ. दानिश इलाहाबादी ने 'अब्दुर्रहमान बिजनौरी : हयात और कारनामे' शीर्षक अपने आलेख में विस्तार से बिजनौरी की जीवनी और कृतित्व को रेखांकित किया।

श्री फ़े सीन एजाज़ ने कहा कि किसी सर्जनात्मक लेखक को बरसों बाद याद किया जाना स्वाभाविक है, लेकिन किसी आलोचक को सौ साल बाद भी याद रखा जाए, इंसकी मिसाल बहुत कम मिलती है। प्रो. इब्ने कँवल ने कहा कि कोई बड़ी बात कहने/करने के लिए तवील उम्र होना ज़रूरी नहीं, बिजनौरी इसकी मिसाल हैं, वे ग़ालिब–तनक़ीद के सिकंदर हैं। प्रो. अनीस अशफ़ाक़ ने उर्दू आलोचकों द्वारा बिजनौरी पर उठाए गए सवालों को उद्धृत करते हुए बिजनौरी को एक कामयाब नक़्क़ाद के रूप में स्थापित किया।

ग़ालिब के बारे में बिजनौरी के इन वाक्यों को प्रायः सभी वक्ताओं ने उद्धृत किया कि "ग़ालिब ने एक ही मानी में किसी लफ़्ज़ का दुबारा इस्तेमाल नहीं किया' तथा 'हिंदुस्तान की इलहामी किताबें दो हैं, पहली, वेदे मुक़द्दस और दूसरी दीवाने ग़ालिब।'

कार्यक्रम का संचालन करते हुए अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने अंत में औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

के. श्रीनिवासराव

रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001, दूरभाष : +91-11-2338 7064, 2307 3002, फैक्स : +91-11-2338 2428
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi-110 001, Phone : +91-11-2338 7064, 2307 3002, Fax : +91-11-2338 2428
E-Mail : secretary@sahitya-akademi.gov.in, Website : http//www.sahitya-akademi.gov.in